International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 19-05-2026, Accepted: 19-06-2026, Published: 04-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 18-21

उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

दामिनी यादव, उपासना श्रीवास्तव
छात्रा, प्रगति महाविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, अध्ययन व्यवहार तथा व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों (50 ग्रामीण एवं 50 शहरी) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति द्वारा किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु के. एस. मिश्रा द्वारा विकसित Academic Motivation Inventory (2020) का उपयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा ज–परीक्षण द्वारा किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी विद्यार्थियों का अभिप्रेरणा स्तर अपेक्षाकृत अधिक था। अध्ययन के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

मूल शब्द: शैक्षिक अभिप्रेरणा, ग्रामीण विद्यार्थी, शहरी विद्यार्थी, उच्चतर माध्यमिक स्तर, शैक्षणिक उपलब्धि

प्रस्तावना
शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का आधार होती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण एवं मूल्यों का विकास होता है। आधुनिक शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन तथा जीवन कौशल विकसित करने पर भी बल देती है।

शिक्षा की सफलता अनेक कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें शैक्षिक अभिप्रेरणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। अभिप्रेरणा वह आंतरिक शक्ति है जो व्यक्ति को किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। जब विद्यार्थी अध्ययन के प्रति प्रेरित होते हैं, तो वे अधिक रुचि, उत्साह एवं समर्पण के साथ अधिगम प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

भारत में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की शैक्षिक परिस्थितियों में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। शहरी क्षेत्रों में आधुनिक विद्यालय, पुस्तकालय, इंटरनेट तथा तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक होती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा को प्रभावित कर सकती हैं। अतः ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा
शैक्षिक अभिप्रेरणा पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक अध्ययन किए गए हैं।

Deci एवं Ryan (1985) ने Self-Determination Theory प्रस्तुत करते हुए बताया कि आंतरिक अभिप्रेरणा सीखने को अधिक प्रभावी बनाती है। Bandura (1997) ने आत्म–प्रभावकारिता को अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण आधार माना। Wigfield एवं Eccles (2000) के अनुसार विद्यार्थियों की सफलता की अपेक्षा तथा कार्य का मूल्य उनकी प्रेरणा को प्रभावित करता है।

Singh एवं Verma (2016) ने ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन किया तथा पाया कि शहरी विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा का स्तर अधिक था। Mishra (2017) ने शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं अध्ययन आदतों के मध्य सकारात्मक संबंध पाया। Gupta, oa Sharma (2022) ने पारिवारिक वातावरण को शैक्षिक अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण निर्धारक माना।

हाल के अध्ययनों में Shukla एवं Agrawal (2023) ने डिजिटल शिक्षण संसाधनों को अभिप्रेरणा वृद्धि का प्रमुख माध्यम बताया, जबकि Singh (2024) ने नई शिक्षा नीति 2020 के सकारात्मक प्रभावों को रेखांकित किया।

साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा शैक्षणिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों, आत्मविश्वास तथा सीखने की गुणवत्ता से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व
शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों की सफलता का आधार है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक परिस्थितियों में अंतर होने के कारण उनकी प्रेरणा में भी अंतर हो सकता है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों एवं नीति–निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

अध्ययन के उद्देश्य
1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना करना।
5. छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ
H_{01} : ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{02} : ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{03} : ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{04} : छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि
शोध विधि: वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि।

जनसंख्या: उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी।

न्यादर्श

वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या
ग्रामीण विद्यार्थी	50
शहरी विद्यार्थी	50
कुल	100

चर

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित चरों का उपयोग किया गया है

a. **स्वतंत्र चर:** प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी परिवेश स्वतंत्र चर हैं।

b. **आश्रित चर:** प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक अभिप्रेरणा आश्रित चर है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन "उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन" में विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का मापन करने हेतु डॉ. के. एस. मिश्रा (2020) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत "शैक्षिक अभिप्रेरणा सूची" (Academic Motivation Inventory - AMI) का उपयोग किया गया। यह एक मनोवैज्ञानिक मापन उपकरण है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में विद्यमान शैक्षिक अभिप्रेरणा के स्तर का वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक मापन करना है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

माध्य

1. मानक विचलन
2. t–परीक्षण (t-test)

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना क्रमांक H_{01}: उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 1: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलनात्मक सारणी

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	t–मूल्य	सार्थकता स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	50	154.32	15.21	2.73	0.05 स्तर पर सार्थक
शहरी विद्यार्थी	50	162.48	14.86		

व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में यह परिकल्पना निर्धारित की गई थी कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों का माध्य 154.32 तथा शहरी विद्यार्थियों का माध्य 162.48 है। दोनों समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता की जाँच हेतु t–परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसमें प्राप्त t–मूल्य 2.73 पाया गया, जो 0. 05 स्तर पर सारणीकृत मान 1.98 से अधिक है। अतः यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना (H_{01}) को अस्वीकृत किया जाता है।

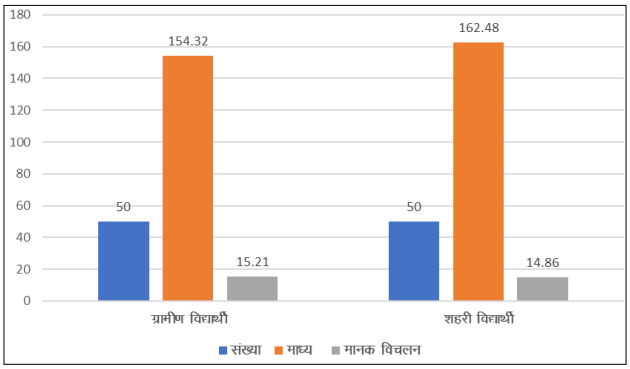

आरेख 1: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलनात्मक आरेख

परिकल्पना क्रमांक H_{02}: उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी 2: ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलनात्मक सारणी

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	t–मूल्य	सार्थकता स्तर
ग्रामीण छात्र	25	152.18	14.85	2.41	0.05 स्तर पर सार्थक
शहरी छात्र	25	161.84	13.72		

व्याख्या

द्वितीय परिकल्पना के अनुसार यह माना गया था कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है। विश्लेषण से प्राप्त परिणामों में ग्रामीण छात्रों का माध्य 152.16 तथा शहरी छात्रों का माध्य 161. 84 पाया गया। t–परीक्षण से प्राप्त t–मूल्य 2.41 है, जो सारणीकृ त मान 1.98 से अधिक है। यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के बीच अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि शहरी छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना (H_{02}) को अस्वीकृत किया जाता है।

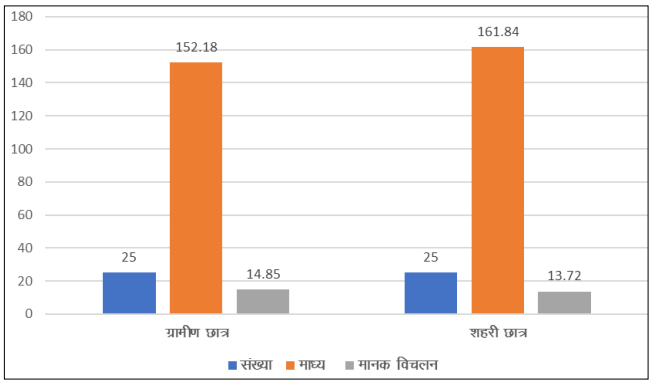

आरेख 2: ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलनात्मक आरेख

परिकल्पना H_{03}: उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी 3:ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलनात्मक सारणी

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	t–मूल्य	सार्थकता स्तर
ग्रामीण छात्राएं	25	156.48	15.64	1.89	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं
शहरी छात्राएं	25	163.12	14.91		

व्याख्या

तृतीय परिकल्पना में यह कहा गया था कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। प्राप्त परिणामों के अनुसार ग्रामीण छात्राओं का माध्य 156.48 तथा शहरी छात्राओं का माध्य 163.12 है। यद्यपि शहरी छात्राओं का औसत अधिक पाया गया, लेकिन t–मूल्य 1.89 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर पर सारणीकृत मान 2.01 से कम है। अतः यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया। इसका अर्थ है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना (H_{03}) को स्वीकार किया जाता है।

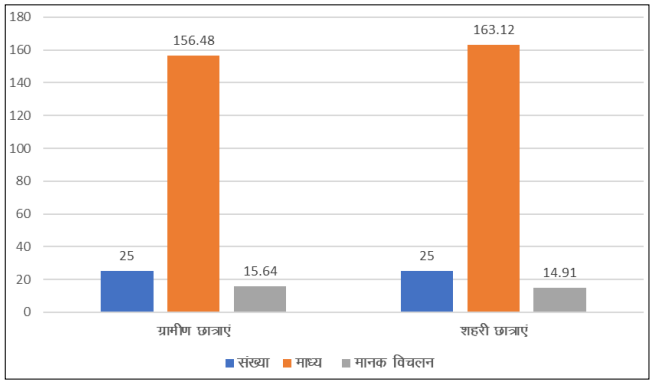

आरेख 3: ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलनात्मक आरेख

परिकल्पना H_{04}: उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी 4

परिकल्पना H_{04}: उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी 4: छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलनात्मक सारणी

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	t–मूल्य	सार्थकता स्तर
छात्र	50	157.00	14.52	0.94	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं
छात्राएं	50	159.80	15.11		

व्याख्या

चतुर्थ परिकल्पना के अनुसार यह माना गया था कि छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अध्ययन के परिणामों में छात्रों का माध्य 157.00 तथा छात्राओं का माध्य 159.80 पाया गया। t–परीक्षण से प्राप्त t–मूल्य 0.94 है, जो सारणीकृत मान 1.98 से कम है। अतः यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा लगभग समान स्तर की है। इसलिए शून्य परिकल्पना (H_{04}) को स्वीकार किया जाता है।

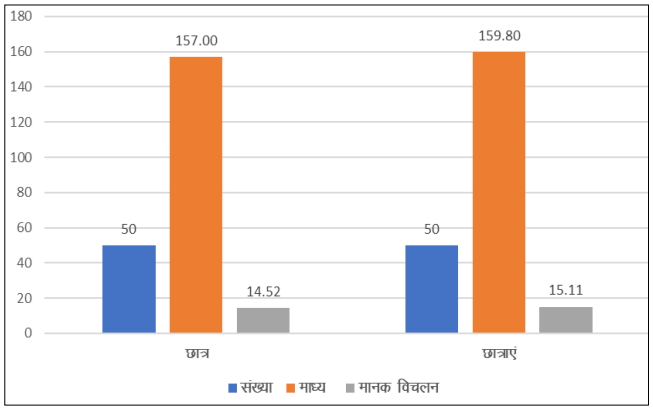

आरेख 4: छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलनात्मक तुलनात्मक आरेख

निष्कर्ष

अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के स्तर में अंतर पाया जाता है। शहरी विद्यार्थियों का अभिप्रेरणा स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। इसका कारण शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध बेहतर शैक्षिक सुविधाएँ, आधुनिक तकनीकी संसाधन, अभिभावकीय सहयोग तथा प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण हो सकता है।

2. ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा

ग्रामीण विद्यार्थियों में भी शैक्षिक अभिप्रेरणा का संतोषजनक स्तर पाया गया। यद्यपि संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत कम है, फिर भी वे उच्च उपलब्धि प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं तथा शिक्षा को अपने जीवन सुधार का माध्यम मानते हैं।

3. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा

शहरी विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति अधिक जागरूकता, प्रतिस्पर्धा एवं लक्ष्य–उन्मुखता पाई गई। आधुनिक शिक्षण साधनों एवं अभिभावकीय सहयोग के कारण उनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा अधिक विकसित पाई गई।

4. छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में बहुत अधिक अंतर नहीं पाया जाता। वर्तमान समय में दोनों वर्ग शिक्षा के प्रति समान रूप से जागरूक एवं प्रेरित हैं।

सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं

विद्यार्थियों हेतु सुझाव

- विद्यार्थियों को स्पष्ट शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए।
- आत्मविश्वास एवं सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना चाहिए।

शिक्षकों हेतु सुझाव

- शिक्षण को रोचक एवं सहभागितापूर्ण बनाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को नियमित प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए।

अभिभावकों हेतु सुझाव

- शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।
- बच्चों पर अनावश्यक दबाव नहीं डालना चाहिए।

विद्यालय प्रशासन हेतु सुझाव

- मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाओं को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।
- सह–शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

सरकार एवं नीति–निर्माताओं हेतु सुझाव

- ग्रामीण विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
- विद्यार्थियों हेतु प्रेरणा–विकास कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।

अनुकरणीय अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए भविष्य में निम्नलिखित क्षेत्रों में अनुसंधान किए जा सकते हैं :–

- विभिन्न कक्षा स्तरों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।
- डिजिटल शिक्षा एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के संबंध का अध्ययन।
- शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं आत्म–प्रभावकारिता (Self-Efficacy) का अध्ययन।
- नई शिक्षा नीति (NEP–2020) के प्रभाव का अध्ययन।

संदर्भ

1. Bandura, A. (1997). Self-efficacy: The exercise of control. W. H. Freeman.
2. Deci, E. L., & Ryan, R. M. (1985). Intrinsic motivation and self-determination in human behavior. Springer.
3. Gupta, N., & Sharma, R. (2022). Family environment and academic motivation among adolescents.
4. Mishra, K. S. (2020). Academic Motivation Inventory. Prayagraj.
5. Pintrich, P. R., & De Groot, E. V. (1990). Motivational and self-regulated learning components of classroom academic performance.
6. Schunk, D. H. (2012). Learning theories: An educational perspective.
7. Shukla, P., & Agrawal, S. (2023). Impact of digital learning resources on academic motivation.
8. Singh, A. (2024). Impact of National Education Policy 2020 on student motivation and self-learning.
9. Singh, R., & Verma, S. (2016). Achievement motivation among rural and urban students.
10. Wigfield, A., & Eccles, J. S. (2000). Expectancy-value theory of achievement motivation.